# शॉल का आख़िर क्या हुआ?



पुनर्लेखन
**अरविन्द गुप्ता**

चित्रांकन
**देबस्मिता दासगुप्ता**

पठन स्तर ३

**'What happened to the shawl?'** Retold by Arvind Gupta
Illustrations: Debasmita Dasgupta
**'Shawl Ka Aakhir Kya Hua?'** — Hindi Translation by Arvind Gupta
© Pratham Books, 2016. Some rights reserved. CC-BY 4.0
First Hindi Edition: 2017

ISBN: 978-93-8634-635-3

Typesetting and layout by:
Pratham Books
New Delhi

Printed by:
J.K. Offset Graphics Pvt. Ltd.
New Delhi

Published by:
Pratham Books
**www.prathambooks.org**

**Registered Office:**
PRATHAM BOOKS
#621, 2nd Floor, 5th Main, OMBR Layout
Banaswadi, Bengaluru 560 043
T: +91 80 42052574 / 41159009

**Regional Office:**
New Delhi
T: +91 11 41042483

The development of this book has been supported by
**Mahle Behr India Pvt Ltd.**

Read hundreds of delightful stories for free on StoryWeaver.
**www.storyweaver.org.in**

MAHLE
*Driven by performance*

Some rights reserved. The story text and the illustrations are CC-BY 4.0 licensed which means you can download this book, remix illustrations and even make a new story - all for free! To know more about this and the full terms of use and attribution visit **http://prathambooks.org/cc**.

**PRATHAM BOOKS**

# शील का आख़िर क्या हुआ?

पुनर्लेखन एवं हिंदी अनुवाद
**अरविन्द गुप्ता**

चित्रांकन
**देबस्मिता दासगुप्ता**

एक दिन भगवान बुद्ध आश्रम के दौरे पर थे।
उन्हें देखकर एक भिक्षु सामने आया।

उसने एक नये अंगरखे यानि शॉल के लिये
प्रार्थना की।

बुद्ध ने उससे पूछा, "तुम्हारे पुराने शॉल का क्या हुआ?"

"भगवन, वो बहुत पुराना हो गया था और जगह-जगह से फट गया था, इसलिये आजकल मैंने चादर की तरह उसका बिछौना बना लिया है," भिक्षु ने कहा।

बुद्ध ने फिर पूछा, "फिर तुमने पुरानी चादर का क्या किया?"

"चादर तो लगातार इस्तेमाल के बाद एकदम फट गई थी। इसलिये मैंने उसे काटकर तकिये का गिलाफ़ बना लिया था," भिक्षु ने उत्तर दिया।

"परंतु तुम्हारे इस नये गिलाफ़ से पहले भी तो तकिये पर कोई गिलाफ़ चढ़ा होगा। उसका क्या हुआ?" बुद्ध ने मामले की बारीकी से जाँच करते हुए पूछा।

"मेरा सिर हज़ारों-लाखों बार उस गिलाफ़ से रगड़ा था। उससे गिलाफ़ फट गया था। मैंने उस फटे हुए गिलाफ़ का एक पायदान बना लिया," भिक्षु ने विनम्रता से कहा।

बुद्ध इस उत्तर से भी असंतुष्ट नज़र आये। वो हमेशा चीज़ों की गहराई से खोज करते थे। उन्होंने अपना अंतिम सवाल पूछा, "अच्छा यह बताओ कि तुमने पुराने पायदान का क्या किया?"

भिक्षु ने अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना के स्वर में कहा, "पुराना पायदान तो पैरों की रगड़ से एकदम तार-तार हो गया था। उसके रेशे बाहर निकल रहे थे। इसलिये मैंने उसके रेशों को इकट्ठा करके एक बाती बनाई। बाद में मैंने उस बाती को तेल के दिये में जलाया।"

भिक्षु की बात सुनकर बुद्ध मुस्कराये।

भिक्षु को नया शॉल मिल गया!

# कपड़े की गेंद बनाइए

## १

घर पर कुछ पुरानी कपड़े की कतरनें ढूँढिये जिनका इस्तेमाल गेंद के लिए किया जा सकता है। इन रंग-बिरंगी कतरनों से आपको दो पंचकोण और पाँच पंखुड़ियों के आकार काटने हैं। ठीक ऐसे:

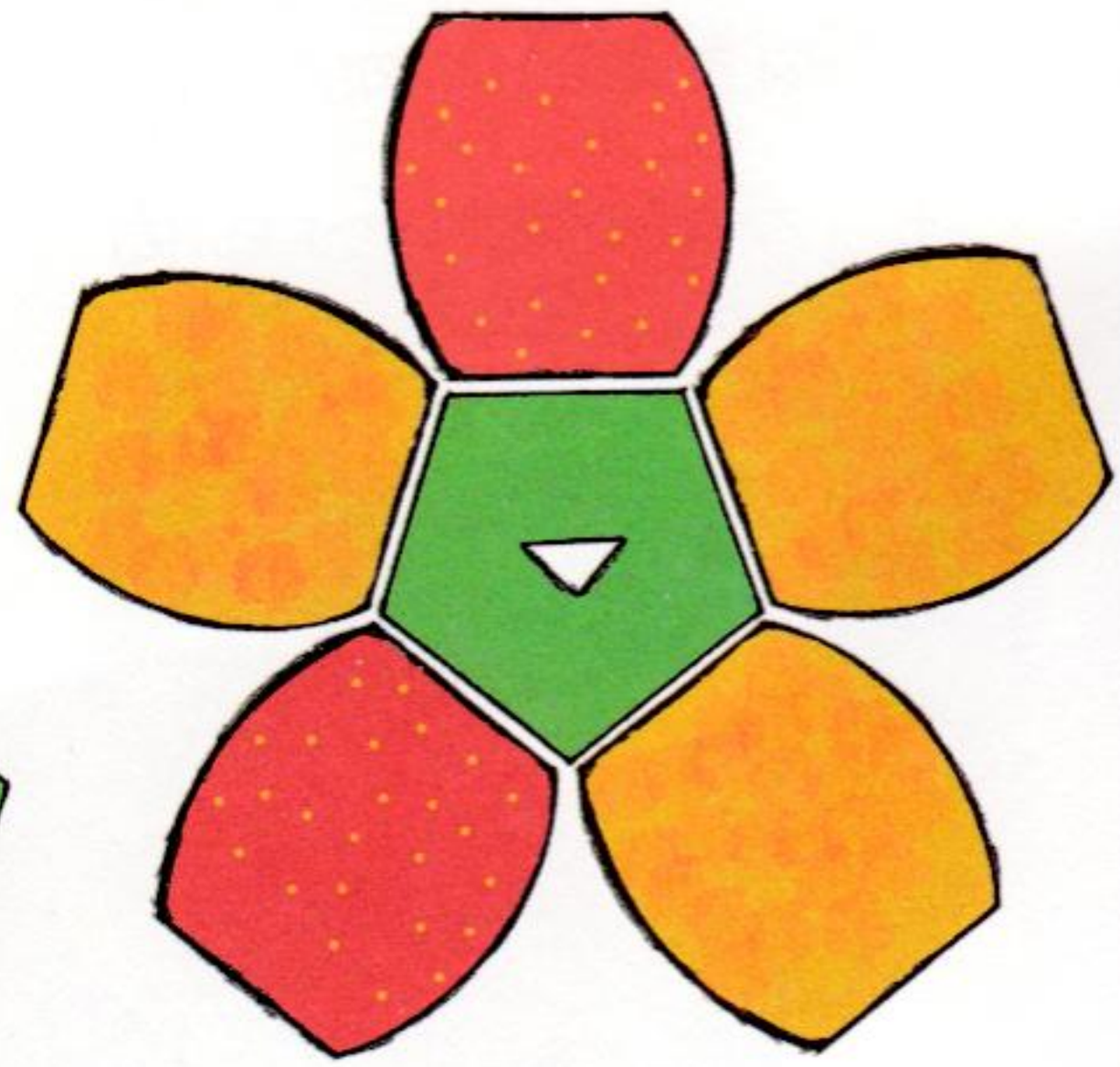

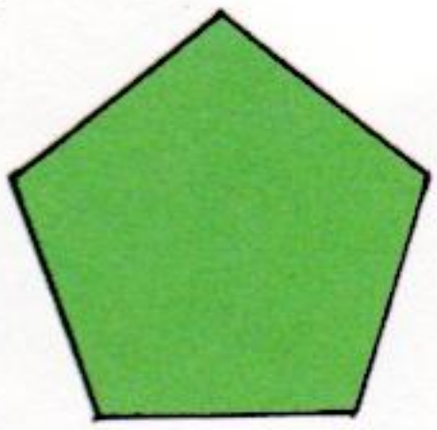

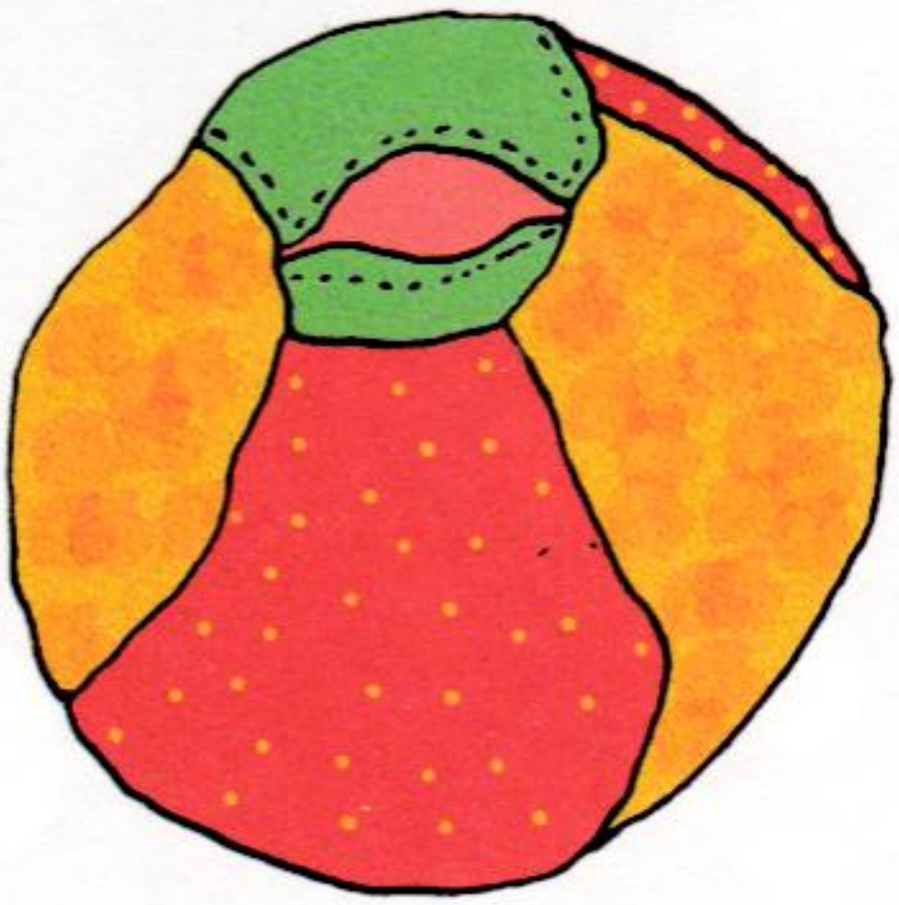

## २

अब हाथ से इन आकारों को आपस में धागे से टाँक दीजिए या फिर किसी बड़े से कह कर मशीन से सिलवा लीजिए। एक पंचकोण कपड़े पर एक छेद भी बना लीजिए।

## ३

अब सिले कपड़े को अंदर से बाहर पलट लीजिए ताकि उसकी सिलाई छुप जाए।

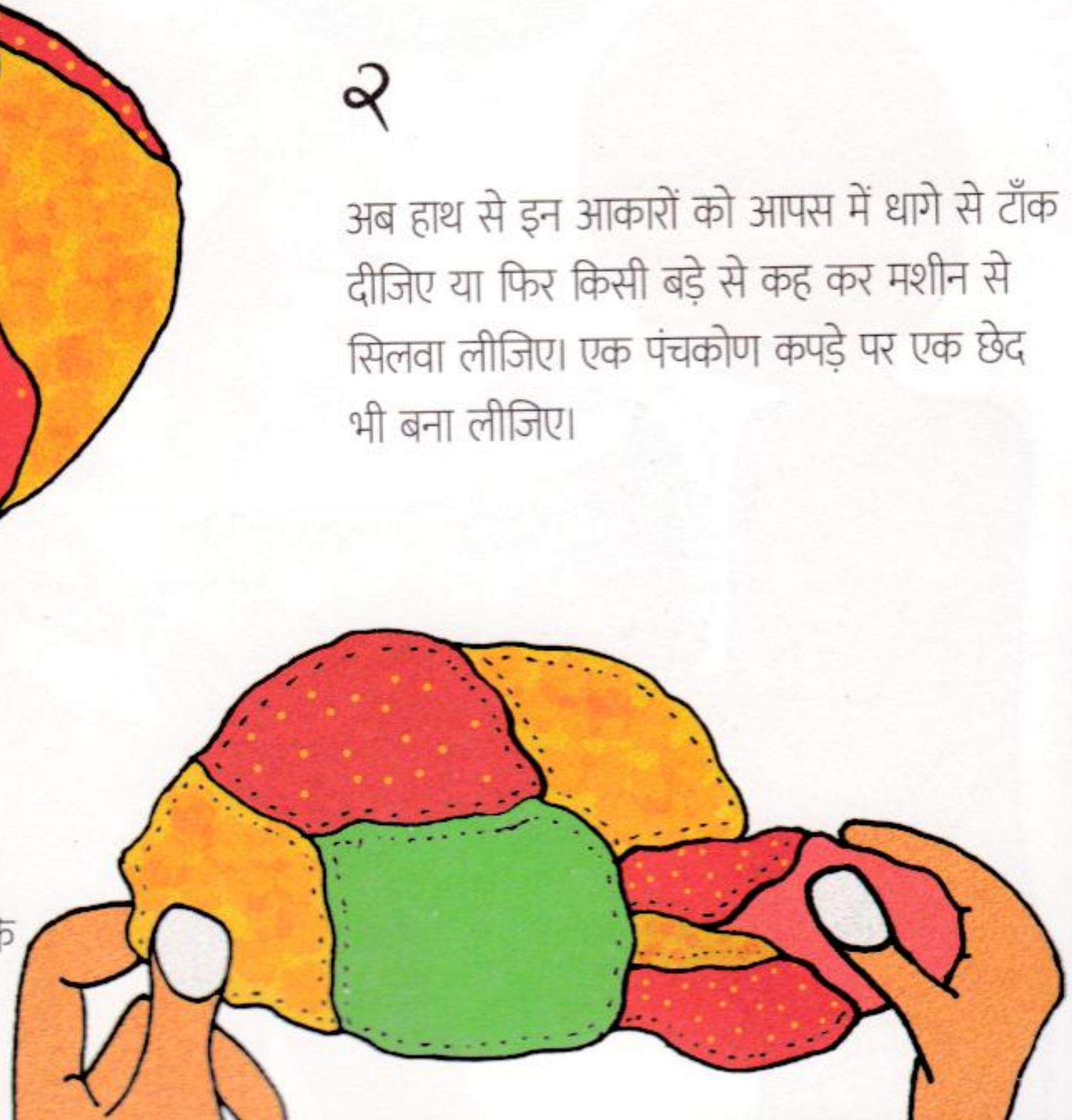

## ४

इसके अंदर एक अच्छा सा गुब्बारा भर दीजिए। अब गुब्बारा फुलाइए।

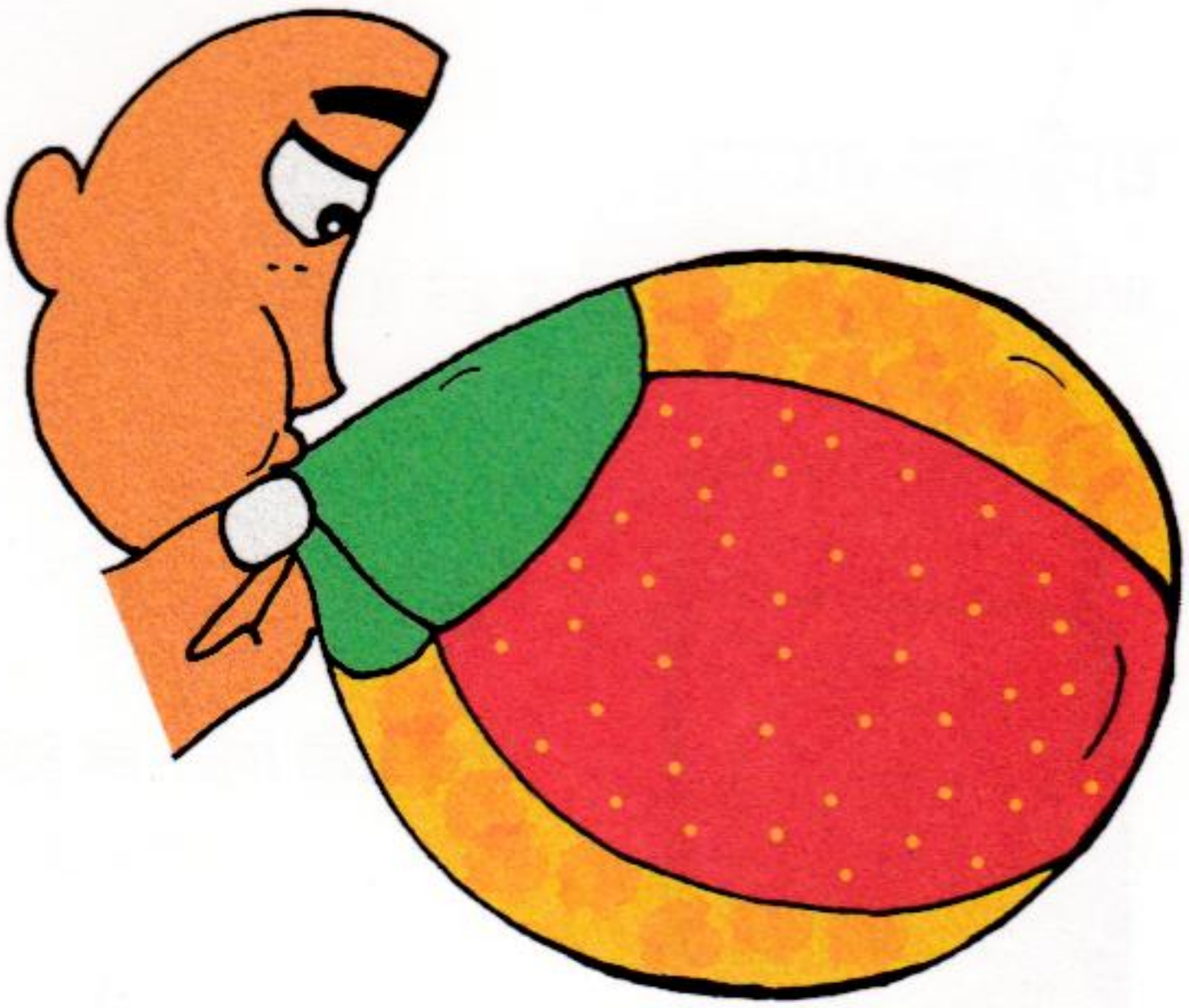

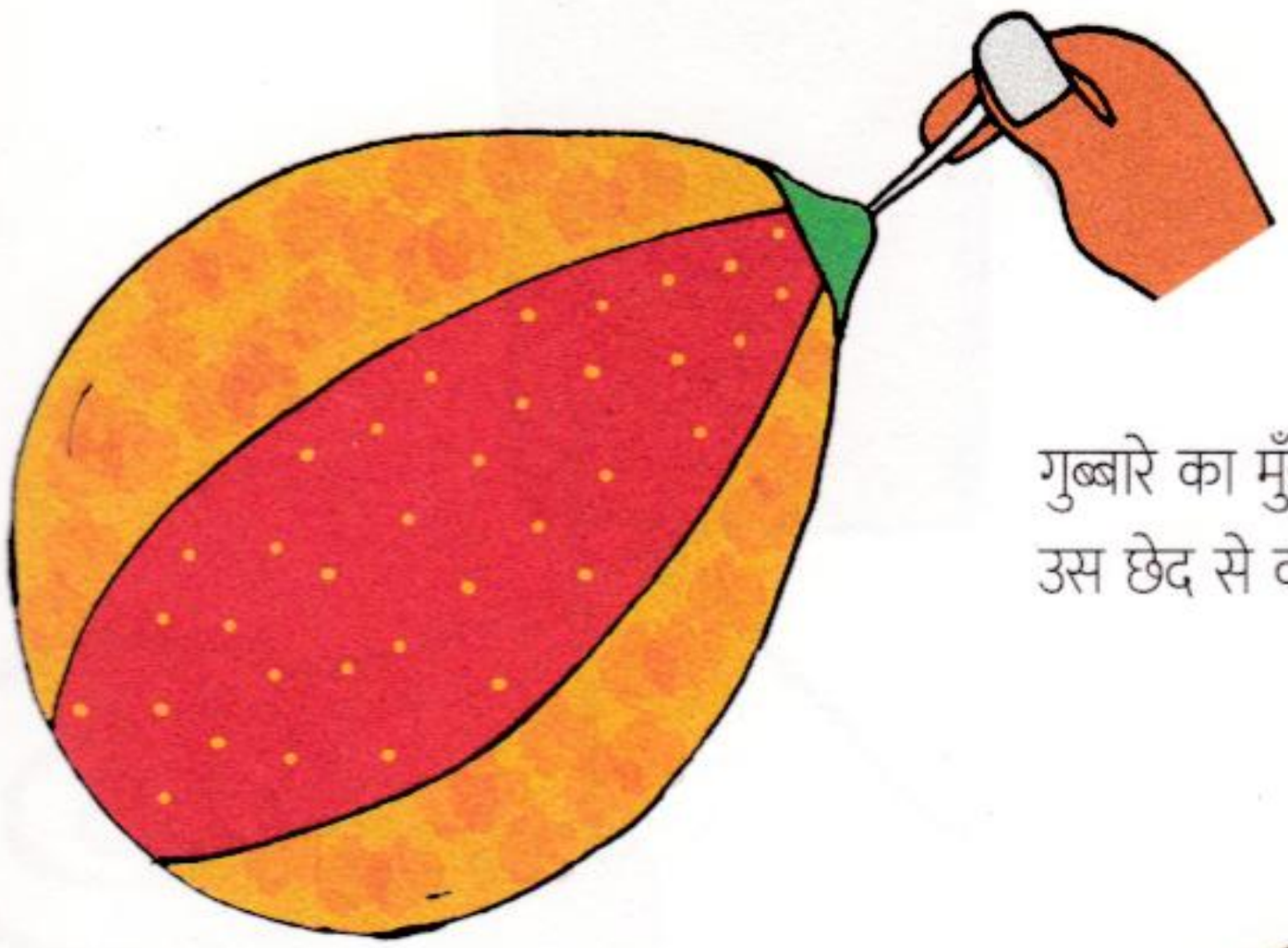

## ५

गुब्बारे का मुँह मरोड़ कर बाँधिए। इस सिरे को उस छेद से कपड़े के अंदर ठूँस दीजिए।

## ६

अरे वाह! आपकी रंग-बिरंगी कपड़े की गेंद तैयार है।

# धागों का कमाल!

आप इस तरह से धागे के टुकड़ों या ऊन से खूब मज़ा ले सकते हैं।

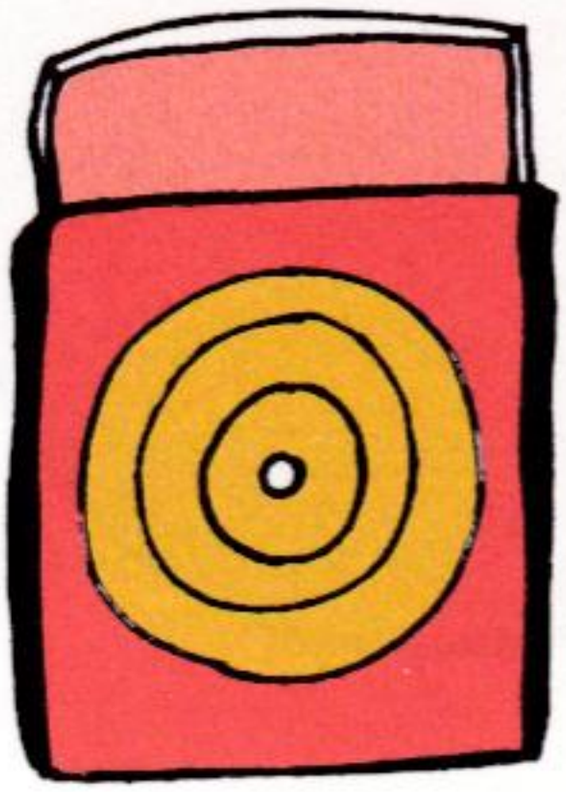

१

एक खाली माचिस की डिबिया लीजिए।

२

लगभग 70 से. मी. लम्बा एक धागा या ऊन इस माचिस की डिबिया में से इस तरह पिरोइए कि वह आड़ा रहे। यानि एक कोने से घुस कर दूसरे कोने से बाहर आए।

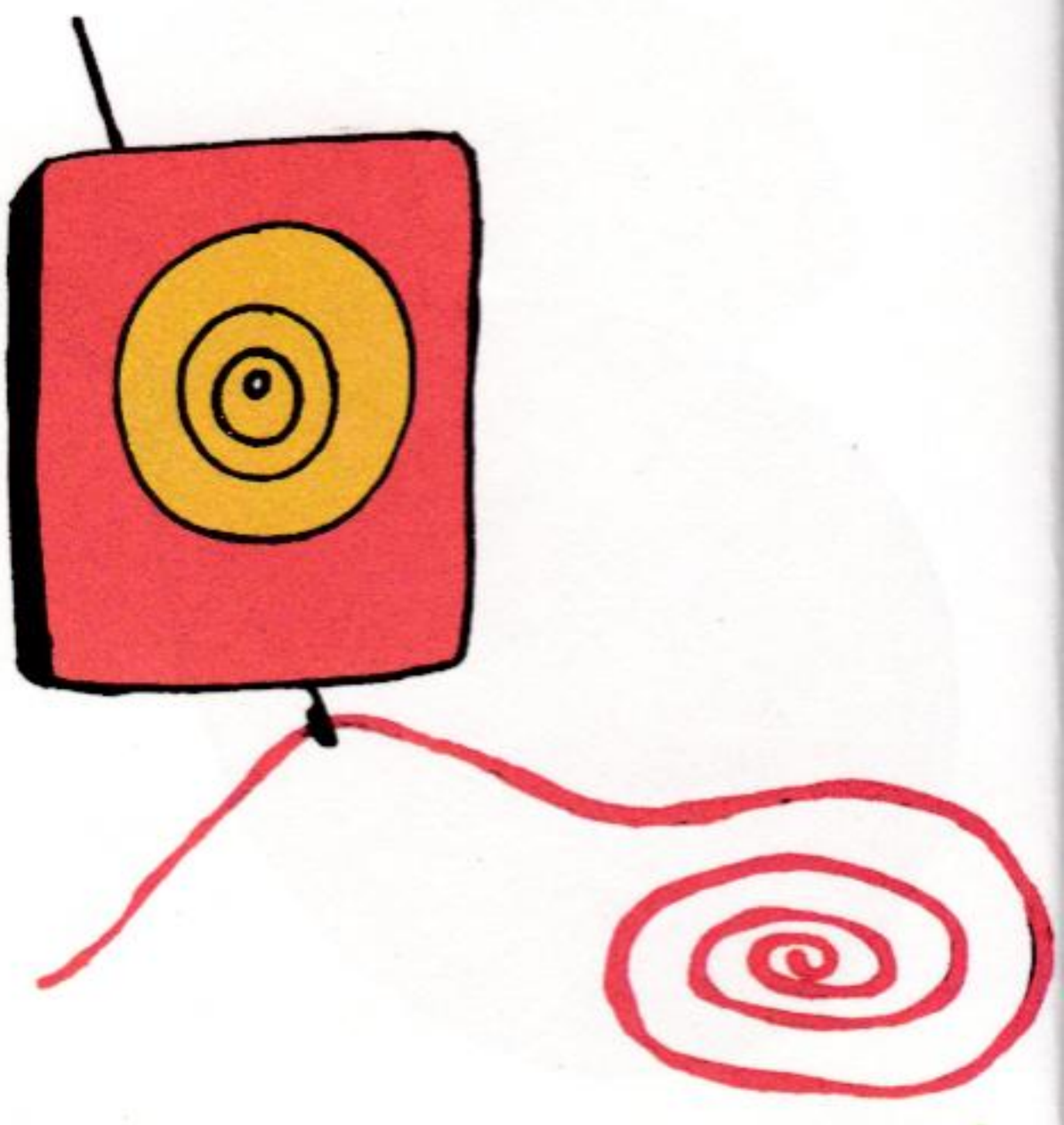

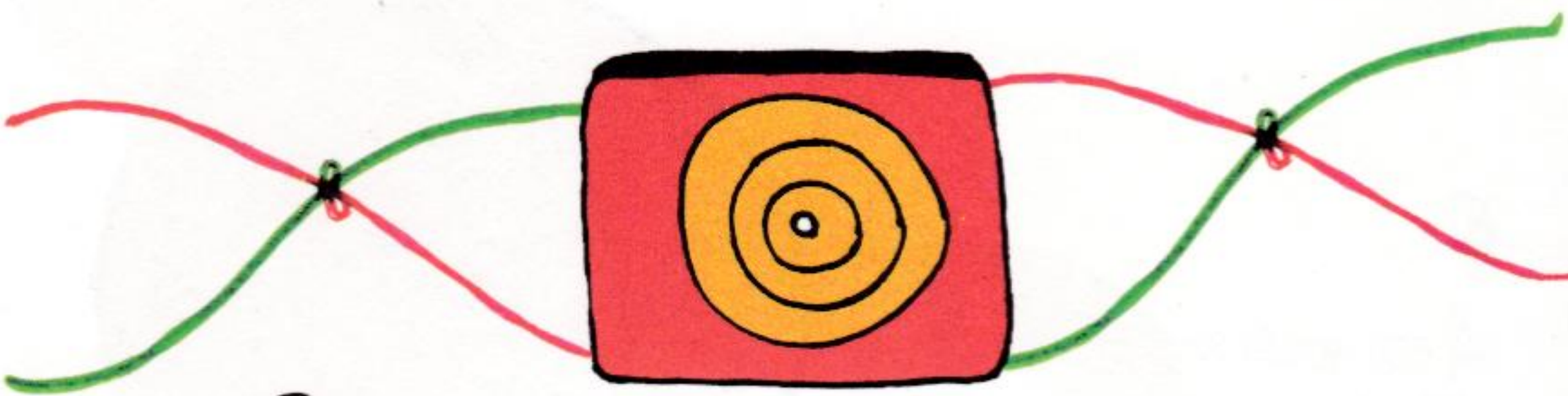

३

किसी और रंग का उतना ही लम्बा एक और धागा या ऊन लीजिए। इसे पहले धागे की दूसरी तरफ़ से वैसे ही आड़े में माचिस की डिबिया में पिरोइए। दोनो धागों को माचिस के दोनो छोरों पर कुछ दूरी पर गाँठ लगा लीजिए।

# पुनः प्रयोग करें! कचरा कम करें!

हम वस्तुएँ खरीदते हैं, इस्तेमाल करते हैं और बिना सोचे-समझे उन्हें फेंक देते हैं। हम ज़रूरत से कहीं ज़्यादा वस्तुएँ खरीदते हैं। ऐसा लगता है मानो हमारा मंत्र हो, "अधिक खरीदो, अधिक फेंको!" हम पृथ्वी के संसाधनों जैसे पानी, पेड़-पौधों, रेत, मिट्टी आदि का दुरूपयोग करते हैं और टनों कचरा पैदा करते हैं जिनसे जगह-जगह कूड़े के पहाड़ बनते जा रहे हैं।

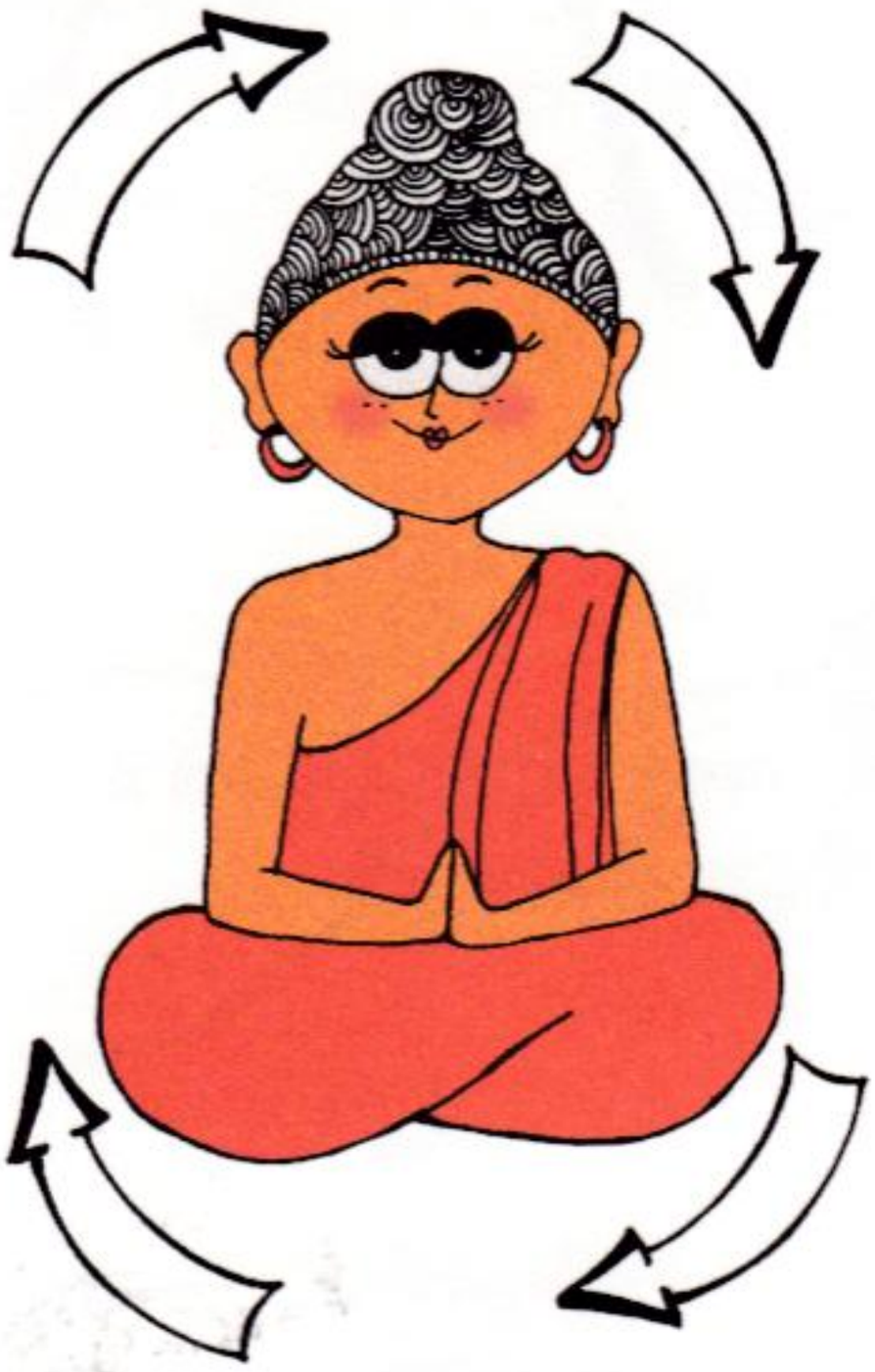

क्या सदा ऐसा ही हाल था? क्या हम भारतीय ऐसे ही चीज़ें फेंकते, बरबाद करते रहे हैं? नहीं! इतिहास बताता है कि हम बहुत ध्यान रखते थे और इस बारे में बड़े संवेदनशील रहे हैं। हम मानते हैं कि हर वस्तु के कई प्रयोग हो सकते हैं। उसका इस्तेमाल कई बार, अलग-अलग तरह से हो सकता है और उसके कई जीवन-काल हो सकते हैं। पुनः प्रयोग और रीसाईक्ल करने की धारणा भारतीय संस्कृति में गहरी समायी हुई है। यह कहानी २५०० साल पहले की है जब महान मुनी और गुरू गौतम बुद्ध यहाँ रहते थे। इसमें वस्तुओं और भौतिक चीज़ों के प्रति एक गहरी समझ-बूझ साफ़ झलकती है। यह कहानी अनायास ही हमें बहुत कुछ सिखा जाती है।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स एक ग़ैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है। इसकी स्थापना सन २००४ में भारतीय भाषाओं में बच्चों के लिए उच्च स्तर व वाजिब दाम की पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए हुई। हमारी पुस्तकों ने लाखों बच्चों तक पढ़ने का आनंद पहुँचाया है। 'प्रत्येक बच्चे के हाथ में एक किताब' पहुँचाने के हमारे उद्देश्य को पूरा करने में हमारी सहायता कीजिये। अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट **www.prathambooks.org** देखिये।

PRATHAM BOOKS
**donate-a-book**

डोनेट-अ-बुक प्रथम बुक्स का एक अनोखा सामूहिक कोष यानि क्राउडफन्डिंग मंच है जो विभिन्न संस्थाओं को बच्चों के पुस्तकालय स्थापित करने के लिए धन एकत्रित करने में सहायता करता है। हमारा विश्वास है कि प्रत्येक बच्चे को पढ़ने का आनन्द मिलना चाहिए। आप पुस्तकालय स्थापित करने के लिए धन देकर या इसके लिए एक ऑन लाइन मुहिम चलाकर देश के बच्चों के पढ़ने में बढ़ावा दे सकते हैं। **www.donateabook.org.in**

PRATHAM BOOKS
**storyweaver**

प्रथम बुक्स का स्टोरीवीवर एक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म है जहाँ भारतीय और विदेशी भाषाओं में बच्चों की कहानियाँ संकलित हैं ताकि हर बच्चे को उसकी मातृभाषा में अनगिनत कहानियाँ पढ़ने का आनंद प्राप्त होता रहे। इन कहानियों को पढ़ा जा सकता है, अनुवाद किया जा सकता है, नये प्रारूपों में ढाला जा सकता है और बिना किसी मूल्य के डाउनलोड भी किया जा सकता है। इससे बच्चों के साहित्य और प्रकाशन के एक नये अध्याय का प्रारम्भ हुआ है। कहानियों के जादू का आनन्द लेने के लिए देखिये **www.storyweaver.org.in**

अरविन्द गुप्ता स्थानीय वस्तुओं और कबाड़ में मिली चीज़ों से मज़ेदार खिलौने और खेल सामग्री आदि तैयार करते हैं, जिनके उपयोग से वे विज्ञान को लोकप्रिय बनाने का कार्य करते हैं। उन्हें इस कार्य के लिए कई पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। अरविन्द गुप्ता ने २७ पुस्तकें लिखी हैं और १५० से ज़्यादा का हिन्दी में अनुवाद भी किया है।

देबस्मिता को दृश्यों के माध्यम से कहानियाँ कहने में आनंद आता है। सिंगापोर की निवासी भारतीय मूल की देबस्मिता का उद्देश्य है ऐसी कला का सृजन करना जो जीवन को हँसते खेलते जीने को प्रेरित करे। वे *माई फ़ादर डॉटर इलस्ट्रेशन्स* नामक एक श्रृंखला की संस्थापिका भी हैं जिसमें विश्व की प्रेरक पिता-पुत्री चित्रों पर आधारित कहानियाँ संकलित हैं।

एक शिष्य के लिए गौतम बुद्ध से एक नया शॉल प्राप्त करना इतना कठिन कार्य निकलेगा, यह उसे पता नहीं था! हज़ारों साल पुरानी बुद्ध के समय काल की इस प्यारी सी कहानी को पढ़िये और जानिये कि आख़िर ऐसा क्यों था?

**स्तरवार पढ़ना सीखें। पठन स्तर ३ की पुस्तक।**

**१ पढ़ने की शुरुआत/ सस्वर पठन**
बहुत छोटे बच्चों के लिये जो पढ़ना चाहते हैं और कहानियाँ सुनने को उत्सुक हैं

**२ पढ़ना सीखने वाले**
उन बच्चों के लिये जो सरल शब्द पहचानते हैं और मदद के साथ नये शब्द पढ़ सकते हैं

**३ अपने आप पढ़ने वाले**
उन बच्चों के लिये जो खुद पढ़ने को तैयार हैं

**४ प्रवीण पाठक**
बड़े बच्चों के लिये जो पढ़ने में प्रवीण हैं

**PRATHAM BOOKS**
प्रथम बुक्स एक ग़ैर-मुनाफ़ा संस्था है जो बच्चों की पढ़ने में रुचि बढ़ाने के लिये अनेक भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।
www.prathambooks.org
What happened to the shawl?
(Hindi)
MRP: ₹ 35.00
ISBN 978-93-8634-635-3